International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 8 (August 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'नेपाली' के काव्य में प्रकृति–चित्रण

डा. श्याम बाबू प्रसाद
प्रधानाचार्य,
मीनापुर मध्य विद्यालय, मीनापुर, मुजफ्फरपुर

सर्वप्रथम कविता का जन्म ही प्रकृति की गोद में हुआ। तब से अब तक वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उससे अप्रभावित नहीं है। उसके रोम–रोम में प्रकृति स्पन्दित हो रही है। प्रकृति के बिना यह निष्प्राण एवं कांतिहीन दृष्टिगत होती है। उन स्थितियों में प्रकृति का महत्व तो और भी बढ़ जाता है जब किसी कवि का बाल कंठ ही प्रकृति की गोद में फूटा हो और उसकी आँखें प्रकृति के इन्द्रधनुषी रंगों के बीच खुली हो। जिसे माँ की ममता और पिता का प्यार दोनों प्रकृति से ही मिला हो तब उसकी कविता में प्राकृतिक रंगों का खिलना उतना ही स्वाभाविक है जितना प्राची में बालारुण का विहँसना। यही कारण है कि नेपाली की कविता में प्राकृतिक कृत्रिमता नहीं है, कोई दबाव नहीं है बल्कि एक स्वाभाविक निःसरण है। उसी तरह जिस तरह गोमुख से गंगा का निकलना। गंगा तप्त भूमि को भिंगोती, तृप्त करती है, और नोपाली की प्रकृति उत्तप्त जनमानस को।

नेपाली के प्रकृति–वर्णन में हम सहज आत्मीयता के दर्शन करते हैं तो इसका कारण है कि कविता का वातायन ही प्रकृति की ओर खुलता था। वे वातानुकूलित कक्ष में बैठकर हिमालय या सुदूर प्राकृतिक दृश्य अंकन करे, अधिकारियों का चरण–चंपन करने के बाद पुरस्कार प्राप्त कर स्वअभिनंदन कराने वाले चापलूस तथाकथित कवियों की जमात में नहीं आते हैं। उनमें प्राकृतिक सहजता थी, स्वाभाविकता थी। यही कारण है कि उनकी प्रत्येक कविता, विशेषकर प्रकृति परक कविता सीधे हृदय संस्पर्श करती है। इसी के पफलस्वरूप उनका प्रकृति–चित्रण कई अर्थों में अपना महत्व रखता है।

नेपाली की कविता में प्रकृति अपनी संपूर्णता के साथ स्पंदित होती हैं। अपने पूर्व या समकालीन कवियों की तरह उन्होंने प्रकृति को पलायन एवं एकांगी अभिव्यक्ति का साधन नहीं बनाया, अपितु उसे सामान्य जन की दैनंदिन समस्याओं एवं भावनाओं से जोड़ा है। उनकी प्रकृति न ही किसी की व्यक्तिगत कुंठा की अनुप्रेरणा देती है। नेपाली खुद को प्रकृति का ऋणी मानते हैं क्योंकि यदि उसकी महिमा नहीं होती तो उनके हाथ में लेखनी की जगह बंदूक होती। यद्यपि उनकी लेखनी भी हजार–हजार मोर्चे पर एक साथ दुश्मनों से लोहा लेती है। उनकी प्रकृति साध्य नहीं, साधन है, जीवन के मोक्ष का साधन। अन्य कवियों की नजर में प्रकृति प्रेयसी है, सहचरी है, देवी है, किन्तु नेपाली की नजर में वह एक सिपाही है, प्राण है, प्रहरी है। यहाँ वे आती हुई रूढ़ मान्यता का खण्डन करते हैं कि स्त्री सिपाही नहीं हो सकती, प्रहरी नहीं हो सकती।

नेपाली की कविताओं में प्रकृति सिर्फ अभिसार करने वाली अथवा मन बहलाने वाली अप्सरा के रूप में न आकर अपने संपूर्ण रूपों में आती है। एक तरफ वह यदि कामिनी है, तो दूसरी ओर प्रचंडिका भी, एक जगह यदि वह सचहरी है तो दूसरी ओर उपदेशिका भी। एक तरफ वह कवि को ऊँगली पकड़कर चलना सिखाती है तो दूसरी ओर विषम परिस्थितियों में जीवन और उसका साध्य भी बताती है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में प्राकृतिक फैलाव समष्टिगत है, व्यष्टिगत संकुचन नहीं। बहुमुखी विकास है, विस्तार है, और उन सभी में उनके विविध रंग भरे पड़े हैं।

यद्यपि नेपाली ने अपनी कविताओं में अपेक्षाकृत कम जगहों पर ही प्रकृति का आलंबन रूप में चित्रण किया है, किन्तु जो भी चित्रण है वह अत्यंत ही स्वाभाविक, भावपूर्ण और अद्वितीय है। उनकी यह विशेषता है कि प्राकृतिक वर्णन के क्रम में वे तत्सम शब्दों का प्रयोग करते हैं जिससे अतिसामान्य पाठक

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 8 (August 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भी समझ सके। नेपाली ने शास्त्रों का गहन अध्ययन नहीं किया था, किन्तु उनकी कविताओं से गुजरते हुए ऐसा लगता है कि छन्द एवं अलंकार उनकी भावधारा में स्वतः ही प्रवाहित होकर उनकी कविताओं में समाहित हो गए हैं–

यह लघु सरिता का बहता जल
कितना शीतल कितना निर्मल
हिमगिरि से निकल–निकल
वह विमल दूध–सा हिमजल
कर–कर निनाद कल–कल छल–छल
बहता आता नीचे पल–पल
तन का चंचल मन का विह्वल
यह लघु सरिता का बहता जल।[1]

एक और उदाहरण–

पीपल के पत्ते गोल–गोल
कुछ कहते रहते डोल–डोल
तब–तब कोमल पल्लव हिलडुल गाते सर्सर, मर्मर
मंजुल लखलख सुन–सुन विह्वल बुलबुल
बुलबुल गाती रहती चह चह
सरिता गाती रहती बह–बह
पत्ते हिलते रहते हर–रह
निर्झर के पास खड़ा पीपल
सुनता रहता कल–कल छल–छल
पल्लव हिलते ढलपल–ढलपल
पीपल के पत्ते गोल–गोल
कुछ कहते रहते डोल–डोल।[2]

प्रकृति कवि के लिए अत्यंत ही आकर्षण का केन्द्र है, प्रिय है। समाज की उदासीनता एवं उपेक्षा ने कवि को प्रकृति की ओर उन्मुख किया है। प्रकृति ने भी कवि को अत्यंत स्नेह और दुलार दिया है। कवि प्रकृति के मुक्त स्नेहदान का कायल है, ऋणी है। वह हृदय से उसके प्रति श्रद्धा–भाव रखता है और उसके सहज, सरल एवं मोहक रूप के अनेक चित्र अपनी तूलिका से अंकित करता है। कवि के बचपन के कई वर्ष देहरादून के रम्य प्राकृतिक गोद में बीता और वहाँ की प्रकृति ने कवि को दुलारने के साथ–साथ उसके कोमल बाल मन की उर्वरा मिट्टी में कवित्व के बिरवे भी रोपे जिसके कारण कवि प्रकृति का साधक बन गयां वह अत्यंत ही श्रद्धाभाव से प्रकृति के चित्रों का अंकन करता है। देहरादून के मधुर बेर का एक चित्र, जिसे तोड़ने में कवि को बड़ा फेर लगाना पड़ता है, फिर भी उसकी मधुरता एवं सुन्दरता के आगे कवि को सारी मुश्किलें छोटी जान पड़ती है–

देहरादून के मधुर बेर
जंगल में मिलते ढेर–ढेर
पड़ता लाने में बड़ा पफेर
देहरादून के मधुर बेर
दूँ मैं बिखेर रे कई सेर
देहरादून के मधुर बेर
जब आता है शरद–काल
लदती बेरों से डाल–डाल

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 8 (August 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लख पीले–पीले लाल–लाल
हो जाती मंसूरी निहाल
थकते न नयन ये हेर–हेर
देहरादून के मधुर बेर।[3]

प्रकृति का इतना सहज, सरल एवं सुन्दर आलम्बन रूप में चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है। नेपाली के काव्य पर लगभग सर्वत्र प्रकृति का आधिपत्य है। विशेषकर जहाँ उन्होंने आलम्बन रूप में उसकी तसवीर खींची है, वह अद्वितीय है। प्रकृति का ऐसा उन्मुक्त साधक हिन्दी साहित्य में शायद ही कोई हो–

पौ फटते ही चमक उठे जब गाँव–खेत–खलिहान
कंधे पर हल डाल कुटी से चला गरीब किसान
उसके स्वेद रुधिर ने सींची जल बन क्यारी–क्यारी
जैसे उसकी मुट्ठी से ही निकली पफसलें सारी
उसकी आँखों में चमकती खेतों की हरियाली
फूट रही गालों पर आशा–अभिलाषा की लाली।[4]

और–

फूलों पर मधुपों का गुनगुन
फुलचुग्गी का मंजुल रूनझुन
सुग्गों का फल खाना चुन–चुन
वह सब वन में लख–लख सुन–सुन
कैसा मन जो उठता न डोल
रे पंछी मंजुल बोल–बोल।[5]

इस तरह आलंबन रूप में कवि का प्रकृति वर्णन अत्यंत ही मोहक जान पड़ता है। अपने प्रकृति वर्णन के क्रम में इन्होंने कई रूढ़ियों का खण्डन करते हुए उसे नया आकार और स्वस्थ आधार दिया है। उनकी लेखनी के गोमुख से निकलकर प्रकृति की गंगा तमाम दुष्वृत्तियों को धोकर एक नयी पवित्रता बिखेरती है–

धवल हिमांचल
निर्झर चंचल
गंगा का जल
यमुना का जल।[6]

जिस तरह एक कुशल चित्रकार की दृष्टि रंगों के संपूर्ण संयोजन पर पड़ी है उसी तरह नेपाली की नजर भी प्रकृति के प्रत्येक उपादान पर पड़ती है और वे उसे अत्यंत ही सरल–सहज शब्दावली में साधारणीकृत करते हैं–

''आ जा तोता आ जा तोता
चोंच तुम्हारी ठीक सरोता
हरा रंग है तन पर पोता
कहते हैं सब तुमको तोता
इधर उधर क्यों खाते गोता
आ जा तोता आ जा तोता।''[7]

एवं–

सुबह–सुबह का सूर्य सलोना,
चंदा आधी रात का प्यारा–प्यारा

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 8 (August 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नील गगन का,
दीपक झंझावात का।[8]

आँगन पर, खिड़की पर, छत पर बूँदों की बौछार
जिनकी समरस नर्तन ध्वनि से गूँज उठा संसार
राजहंस बगुले मोती के बिखर रहे हैं हास
बूँदों की भीनी सुगंध ले आता मलय समीर
घर–घर आ पहुँचे हो जैसे आज नदी के नीर।[19]

उद्दीपन की दृष्टि से अध्ययन करने पर नेपाली की प्रकृति मुख्य रूप से राष्ट्रीय–सामाजिक भावनाओं को उद्दीप्त करती जान पड़ती है। यह दृष्टि उनकी अपनी अलग पहचान बनाती है। और, इसके द्वारा उन्होंने उद्दीपन वर्णन की रूढ़ हो चुकी परम्परा को ध्वस्त किया है। वे एक राष्ट्रीय–सामाजिक भावधारा के सफल कवि रहे हैं।

फलतः उनकी कविता के सभी अंग अथवा रूप राष्ट्रवादी एवं जन समुदाय के हितार्थ समर्पित है। यद्यपि कहीं–कहीं उनकी प्रकृति निजी प्रेमानुभूति को भी उद्दीप्त करती है। किन्तु उसकी संख्या बहुत ही कम एवं स्वाभाविक है। अपने पूर्ववर्तियों की तरह उनकी प्रकृति प्रिय के अभाव में चाँदनी बनकर प्रियतमा को नहीं जलाती है और न ही गुलाबी पँखुरियों से उसके सुकोमल शरीरांगों को खरोचती है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सरिता, उमंग, पृ. 68
2. पीपल, उमंग, पृ. 62
3. बेर, उमंग, पृ. 73
4. नवीन, पृ. 18
5. उमंग, पृ. 48
6. हिमालय ने पुकारा, पृ. 132
7. असंकलित रचनाएँ, पृ. 85
8. उमंग, पृ. 65
9. असंकलित रचनाएँ, सं. डॉ. सतीश कुमार राय, पृ. 54
10. हिमालय ने पुकारा, पृ. 24
11. वही, पृ. 45
12. वही, पृ. 55
13. वही, पृ. 117
14. वही, पृ. 98
15. उमंग, पृ. 15
16. नवीन, पृ. 5
17. असंकलित रचनाएँ, पृ. 54
18. सतीश राय अनजान, नेपाली का प्रकृति चित्रण, गोपाल सिंह नेपाली जीवन और साहित्य, सं. डॉ. बलराम, पृ. 95–96
19. नवीन, पृ. 3